उपसंहार

* उपसंहार *

''अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना'' के अध्ययन करने के उपरांत निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत हैं -

अब्दुल बिस्मिल्लाह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विवेचन-विश्लेषण के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उनका व्यक्तित्व प्रगतिशील, संवेदनशील, गंभीर, अध्ययनशील है और मनुष्य को यथार्थ एवं आदर्श की ओर आकर्षित करनेवाला है, जो विभिन्न बवंडर, तुफान, संकट आदि कठिनाइयों से संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता हुआ दृष्टिगोचर होता है । उन्हें बचपन में माता-पिता तथा परिवार से प्यार नहीं मिला । क्योंकि माता-पिता का देहावसान उनके बचपन में हुआ था । इसलिए उनको विभिन्न प्रकार के संघर्ष को झेलना पड़ा है ।

इतनी सारी संघर्षमय स्थिति में भी उन्होंने पढ़ाई जारी रखी । इसलिए वे मेधावी छात्र, स्वाभिमानी, भावुक तथा युवकों के प्रेरणा स्रोत बने हैं । उनके पास प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचारधारा होने के कारण उनका साहित्य मानवतावादी रहा है । उन्होंने सर्वहारा वर्ग को केंद्र में रखकर शोषितों के पक्ष में शोषकों के खिलाफ आवाज उठायी । वे हिंदू तथा मुस्लिम समाज में प्रचलित कुप्रथाओं एवं रूढ़ियों को यथार्थता के साथ प्रस्तुत करते हैं । उन्होंने अनेक विधाओं में अपनी प्रभावशाली कलम चलायी है जो अमिट छाप छोड़नेवाली परिलक्षित होती है । अंतत: उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी दृष्टिगोचर होता है । निष्कर्षत: स्पष्ट है कि बिस्मिल्लाह जी का व्यक्तित्व एक आदर्श के रूप में और कृतित्व चेतनादायी तथा संघर्षशील परिलक्षित होता है, जो पाठकों को सोच-विचार करने के लिए बाध्य करता है ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का विषयगत विवेचन :-

उपर्युक्त अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'समर शेष है' से लेकर 'मुखड़ा क्या देखे' तक के सभी उपन्यासों की विषय वस्तुओं में विविधता है । 'समर शेष है' में कथा-नायक के आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक जीवन के संघर्षमयी पक्षों का यथार्थ चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है । 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में बनारस के मुसलमान बुनकरों की जिंदगी का, उनकी दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है । इसमें बुनकर धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक

SAURASHTRA UNIVERSITY LIBRARY RAJKOT

आदि सभी धरातल पर कैसे अभावग्रस्त जिंदगी जी रहे हैं इसका चित्रण प्रस्तुत है । 'जहरबाद' में कथा-नायक को केंद्र में रखते हुए बिस्मिल्लाह जी ने ऐसे परिवार का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है जो गरीबी की रेखा के बहुत नीचे का जीवन जी रहे हैं । इसमें जीवन के दु:ख का महाकाव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है । 'दंतकथा' कोई दंतकथा न होकर एक मुर्गे की आत्मकथा है । इसमें मुर्गे की संघर्षमयी जिंदगी का यथार्थ चित्रण किया गया है । 'मुखड़ा क्या देखे' में मुस्लिम चुड़िहार के परिवार का, हिंदू प्रजा और मुस्लिम प्रजा की ओर से किस प्रकार शोषण होता है इसका और उसकी दयनीय जिंदगी का स्वाभाविक चित्रण मिलता है ।

बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों में पात्रों का चित्रण प्रभावशाली ढंग से हुआ है । उनके उपन्यासों में सभी वर्ग के पात्र परिलक्षित होते हैं लेकिन लेखक की दृष्टि सर्वहारा वर्ग की ओर अधिक केंद्रित परिलक्षित होती है । अब्दुल बिस्मिल्लाह के अधिकतर पात्र अपने जीवन-संघर्ष में असफल हुए दृष्टिगोचर होते हैं लेकिन वे निरंतर अन्याय-अत्याचार तथा शोषण के खिलाफ संघर्ष करते रहते हैं । उनके उपन्यासों के संवाद मार्मिक हैं जो थोड़े शब्दों में 'गागर में सागर' भर देते हैं और पूरी स्थिति का खुलासा कर देते हैं । विवेच्य उपन्यासों में वातावरण का चित्रण यथार्थ रूप में किया हुआ दृष्टिगोचर होता है । भाषा पर बिस्मिल्लाह जी का जबरदस्त अधिकार है । उनके उपन्यासों का उद्देश्य अन्याय, अत्याचार एवं शोषण के विरूद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित करना है । निष्कर्षत: स्पष्ट है कि उनके उपन्यासों में यथार्थ के साथ-साथ आदर्श भी दृष्टिगोचर होता है ।

विवेच्य उपन्यासों में संघर्ष-चेतना :-

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आते हैं वे इस प्रकार हैं -

विभिन्न विद्वानों द्वारा 'संघर्ष' और 'चेतना' शब्दों के अलग-अलग अर्थ तथा परिभाषाएँ दी गई हैं । विवेचन-विश्लेषण के पश्चात स्पष्ट होता है कि संघर्ष-चेतना से अभिप्राय सर्वहारा वर्ग द्वारा शोषकों के खिलाफ उठायी गयी आवाज से है । संघर्ष-चेतना का स्वरूप व्यापक होता है । अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है । विवेचित उपन्यासों में मजदूरों की संघर्ष-चेतना प्रबल रही है । इसका प्रमुख कारण गिरस, कोठीवाल, मिल-मालिक आदि रहे हैं । अब्दुल बिस्मिल्लाह ने युवा पीढ़ी में स्थित संघर्ष-चेतना को उजागर किया है । युवाओं का संघर्ष विभिन्न धरातलों पर मिलता है । हम

नारी को अबला कहते हैं लेकिन लेखक ने यह दिखाया है कि नारियों में भी संघर्ष करने की चेतना प्रबल हो सकती है । नारी की संघर्ष-चेतना का प्रमुख लक्ष्य शोषण तथा अन्याय के खिलाफ खड़े रहना है । शिया और सुन्नी संप्रदाय में भी संघर्ष-चेतना के स्वर परिलक्षित हुए हैं । इनका विवाद कब्रस्तान को लेकर है । विवेच्य उपन्यासों में पर्दा-प्रथा के बंधन को तोड़ दिया है । साथ-साथ जमींदारों और किसानों में भी संघर्ष-चेतना के उदाहरण मिलते हैं । विवेच्य उपन्यासों में मानसिक संघर्ष-चेतना पर्याप्त मात्रा में मिलती है । इसके भिन्न-भिन्न कारण भी मिलते हैं । इन उपन्यासों में पिता के प्रति पुत्र में भी संघर्ष-चेतना दिखाई देती है । 'अर्थ' इस संघर्ष का मूल कारण है । लेखक ने विवेच्य उपन्यासों में छात्रों में प्राप्त संघर्ष-चेतना को उजागर कर आज की भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार किया है ।

विवेच्य उपन्यासों में मुस्लिम जीवन-संघर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय के समूचे अध्ययन के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं -

मुस्लिमों का हिंदुस्तान में आगमन आक्रमणकारियों के रूप में छठवीं-सातवीं शताब्दी में हुआ था । उन्होंने हिंदुस्तान पर करीबन ढाई सौ वर्ष तक राज्य किया । औरंगजेब के साथ मुगल साम्राज्य का अंत और अंग्रेजों का हिंदुस्तान में आगमन एक महत्त्वपूर्ण घटना है । मुस्लिमों के पश्चात डेढ़ सौ वर्ष अंग्रेजों ने हिंदुस्तान पर शासन किया । उन्होंने कूट नीति को अपनाकर देश का दो हिस्सों, भारत-पाकिस्तान में विभाजन कर सांप्रदायिक संघर्ष को बढ़ावा देने का प्रयास जारी रखा । प्राय: देश-विभाजन के पश्चात ही मुस्लिमों के संघर्षशील जीवन का आरंभ होता है । विवेच्य उपन्यासों में मुस्लिम-जीवन-संघर्ष का चित्रण प्रचुर मात्रा में मिलता है । प्रस्तुत उपन्यासों में भी धार्मिक एवं सांप्रदायिक संघर्ष का चित्रण अत्यधिक मात्रा में दृष्टिगोचर हुआ है । इन उपन्यासों के पात्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए (जैसे - अधिकार, अस्तित्व, अन्याय, तलाक, अकाल आदि) विभिन्न रूपों से संघर्ष करते हैं । प्रादेशिक संघर्ष के कारण भी मुस्लिमों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा है । कुछ उपन्यासों में नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में भी संघर्ष प्रस्फुटित हुआ है । विवेच्य उपन्यासों में आपसी संघर्ष का चित्रण भी प्राप्त हुआ है । अंतत: मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि देश-विभाजन के पश्चात ही वास्तविक रूप से मुस्लिम जीवन संघर्षमय रहा है । इसके मूल में आर्थिक कारण प्रधान है । इसके साथ ही सांप्रदायिकता का जहर भी संघर्ष का कारण बना है ।

विवेच्य उपन्यासों में संघर्ष-चेतना के विविध आयाम :-

विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त संघर्ष-चेतना के विविध आयामों के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचता हूँ कि विवेच्य उपन्यासों में अर्थ से संबंधित संघर्ष-चेतना का आयाम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । हम जो संघर्ष करते हैं वे प्राय: अर्थ प्राप्ति के लिए ही होते हैं । अर्थ के कारण मजदूर मालिकों में संघर्ष का चित्रण मिलता है । मजदूर अर्थ के कारण ही मालिकों के खिलाफ आंदोलन छेड़ते हैं । समाज से संबंधित संघर्ष-चेतना का आयाम इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि समाज के बिना सब निरर्थक है । सामाजिक संघर्षों में तलाक, अकाल, नारी आदि विभिन्न संघर्षों का चित्रण मिलता है । समाज में धार्मिक संघर्ष के भी अधिक उदाहरण मिलते हैं । हिंदू-मुस्लिम तथा अन्य किसी भी धर्मियों के त्यौहार, उत्सव आदि के समय धार्मिक संघर्ष होता है और इसमें कई निरपराधियों की जानें चली जाती हैं । इसलिए सभी धर्मावलंबियों में सुधार की आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है । जिंदगी में मनुष्य को अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है और जो संकटों पर मात करता है वह सफल होता है । इसलिए जिंदगी में संघर्ष एक महत्त्वपूर्ण आयाम है । इन विभिन्न महत्त्वपूर्ण आयामों के साथ ही शिक्षा, राजनीति, साम्प्रदायिकता, अन्तर्जातीय संघर्ष, अधिकार से संबंधित संघर्ष, शोषण के खिलाफ संघर्ष तथा व्यक्तिगत संघर्ष-चेतना आदि का अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व है ।

उपलब्धियाँ :-

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास साहित्य में चित्रित समाज की संघर्ष-चेतना पूरे भारतवर्ष के समाज का प्रतिनिधि रूप है ।
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में अन्य समाज की तुलना में प्रधानत: मुस्लिम समाज का चित्रण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है । मुस्लिम समाज के अलावा हिंदू समाज का चित्रण भी प्रधान रूप में रहा है और अन्य समाज का चित्रण अत्यल्प मात्रा में । अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का अध्ययन करनेवाला हर समझदार पाठक अपनी संघर्षशील परिस्थिति को आसानी से पार कर सकता है और जिंदगी में आनेवाले विभिन्न कठिन प्रसंग, अन्याय, अत्याचार तथा शोषण रूपी बवंडरों का निड़रता के साथ सामना कर सकता है । अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास साहित्य की यही महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है ।
3. विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त संघर्ष-चेतना न सिर्फ बनारस तथा उसके आसपास के गाँवों के लोगों में है बल्कि वर्तमानकालीन भारतवर्ष के समाज में भी है ।

4. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में प्राप्त विभिन्न संघर्ष और स्वाभिमानी वृत्ति आज के समाज की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है ।
5. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों की बुनियाद गाँवों की जिंदगी है और गाँवों में रहनेवाले सर्वहारा वर्ग के अनेक प्रतिनिधि पात्र संघर्ष के लिए सचेत दृष्टिगोचर होते हैं । अत: उनकी औपन्यासिक रचनाओं को पढ़नेवाला प्रत्येक समझदार पाठक अन्याय-अत्याचार और शोषण के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित हुए बिना नहीं रहेगा । विवेच्य उपन्यासों की यह सबसे बड़ी उपलब्धि महसूस होती है ।

अध्ययन की नई दिशाएँ :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में धार्मिकता एवं सांप्रदायिकता का मूल्यांकन
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह के सीहत्य में मुस्लिम समाज जीवन
3. अब्दुल बिस्मिल्लाह के समग्र साहित्य में हिंदू-मुस्लिम संघर्ष
4. अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य का कथ्य एवं शिल्प
5. अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में निम्नमध्यवर्गीय समाज

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात प्राप्त हुए हैं जिनपर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है । वस्तुत: हर विषय की कुछ अपनी सीमा होती है । यहाँ मेरे अपने शोध विषय की भी सीमा है । शायद भविष्य में आनेवाले शोधार्थी इन विषयों पर शोधकार्य संपन्न करें ।

❑❑❑❑